कविता के ज़रिए सीखने का सुदृढ़ीकरण

प्रिया जायसवाल

शिक्षकों के बीच काम करते हुए मैं अंजलि गुप्ता से मिली। अंजलि गुप्ता, धोरण, रायपुर, उत्तराखण्ड के सरकारी प्राथमिक विद्यालय में प्रधान शिक्षिका हैं। वे इस बात पर यक़ीन करती हैं कि बच्चे तनाव मुक्त माहौल में कहानी, कविता और खेल के ज़रिए कोई भी विषय आसानी और जल्दी सीख सकते हैं जिसमें उन्हें पढ़ाई बोझिल न लगे। इस तरह सीखने से बच्चों में पारस्परिक-सम्प्रेषण का कौशल और सामूहिक काम करने की भावना विकसित होती है।

दो दशक से अधिक के अपने शिक्षण अनुभव में, अंजलि गुप्ता ने कई कविताएँ रची हैं और उन्हें पाठ्यपुस्तकों के विषयों से जोड़ा है, जैसे क्रिया शब्द, पहाड़ा और गिनती। वे कविता का इस्तेमाल ट्रैफिक के नियम, अंगों के नाम और उनके काम, राष्ट्रीय चिह्न, दिनों और महीनों के नाम, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, जानवरों और पक्षियों की आवाज़ें और उनके अँग्रेज़ी नाम सिखाने के लिए करती हैं।

सुबह की सभा में, उनके बच्चे हाव-भाव के साथ छोटी, मज़ेदार कविताएँ सुनाते हैं। जब बच्चे कविता में माहिर हो जाते हैं तो उनकी सहायता से अंजलि उस कविता को बोर्ड पर लिखती हैं और उनके विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से उस कविता को उंगली रखकर पढ़ने लगते हैं। लगातार इसी पद्धति के इस्तेमाल से बच्चे सरल शब्द, पैराग्राफ़, कहानी और कविता लिखना व पढ़ना सीख जाते हैं।

खेल के ज़रिए हिन्दी की मात्राओं की समझ

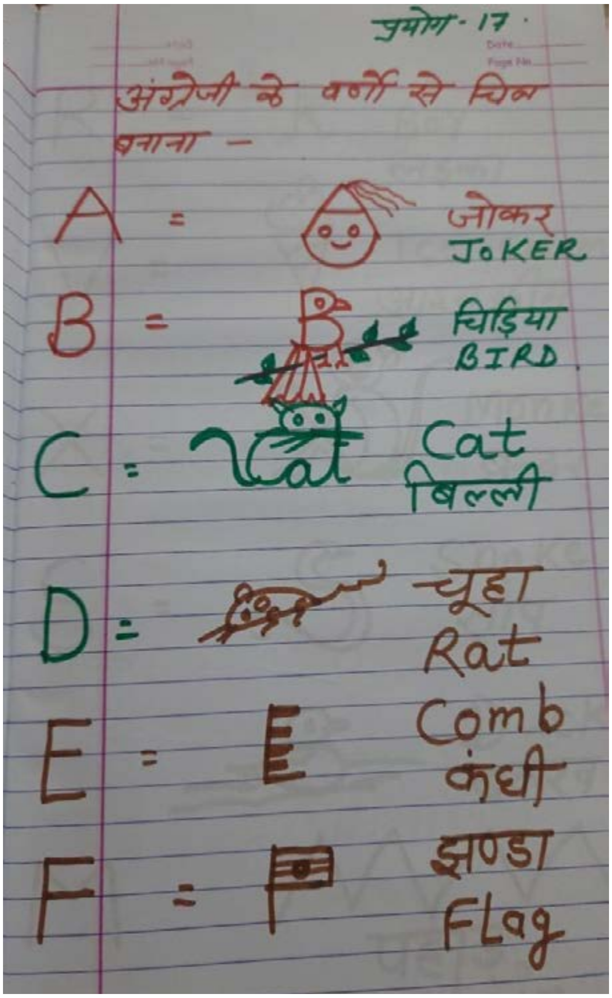
अंजलि गुप्ता को यह बात समझ आई कि मात्राओं की समझ नहीं होने की वजह से विद्यार्थियों को शब्द का ठीक-ठीक उच्चारण करने में और उन्हें धाराप्रवाह या बिना अटके पढ़ने में तक़लीफ़ हो रही है। उनकी मात्राओं की समझ विकसित करने के लिए उन्होंने शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) विकसित की और कुछ गतिविधियाँ भी तैयार कीं। उदाहरण के लिए, उन्होंने 'मात्रा खिड़की' बनाई। इस गतिविधि में एक बच्चा वर्णमाला के किसी भी अक्षर का फ्लैश कार्ड बनाई गई खिड़की पर लगा सकता है और उस शब्द को मात्रा के साथ जोड़कर पढ़ सकता है। उन्होंने कई मात्राओं, अक्षरों और शब्दों के अलग-अलग फ्लैश कार्ड बनाए हैं। बच्चों को मात्रा पहचानने में मदद मिले इसके लिए अंजलि उन्हें शब्दों के फ्लैश कार्ड देती हैं और उनसे उन शब्दों में आने वाली मात्रा के फ्लैश कार्ड ढूँढ़ने के लिए कहती हैं। इसके साथ ही, बच्चे स्कूल के 'प्रिन्ट रिच' माहौल (जैसे दीवारों पर लिखाई आदि) में मात्राओं के साथ लिखना और पढ़ना सीखते हैं।



चित्र-1 : *मात्रा खिड़की ।*

दूसरी गतिविधि में, वे चॉक के इस्तेमाल से ज़मीन पर अक्षर लिखती हैं, जैसे 'क' और फिर उस अक्षर के चारों ओर अलग-अलग मात्राओं का घेरा बना देती हैं। उसके बाद अंजलि (उस शब्द को किसी भी मात्रा के साथ जोड़कर) ज़ोर से बोलती हैं, जैसे 'को' और बोलने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछा जाता है कि 'को' के उच्चारण में कौन-सी मात्रा का इस्तेमाल किया गया था। बच्चे सवाल सुनकर उस मात्रा पर छलाँग लगाते हैं। अंजलि, ऐसी ही कई और गतिविधियों में बच्चों को शामिल करती हैं जिससे मात्रा को लेकर उनकी समझ और पुख़्ता होती है। इसके परिणामस्वरूप कक्षा-2 से 5 तक के 75 प्रतिशत बच्चों की मात्राओं को लेकर अच्छी समझ बन गई है। बच्चे अब ख़ुद ही बोलने, लिखने और वाक्यों की संरचना करने लगे हैं। वे अब अपनी लाइब्रेरी में कहानियाँ भी पढ़ लेते हैं।

हर रोज़, शिक्षक विद्यार्थियों से पाँच अलग-अलग चीज़ों के नाम लिखने के लिए कहती हैं जो उनके लिखने और सोचने की क्षमता को मज़बूत करने में सहायक होते हैं – जैसे खाने का नाम, सब्ज़ियों के नाम, पालतू या जंगली जानवर, यातायात के साधन, ज़ेवर, कपड़ों के नाम, खेल के नाम, फूलों के नाम



चित्र-2 : अँग्रेज़ी के अक्षरों से चित्र बनाना।

और जगहों के नाम आदि। बच्चे इस गतिविधि में भाग लेने के लिए बहुत उत्साहित रहते हैं और हर कोई सबसे पहले नाम लिखकर देना चाहता है। अधिक अभ्यास के लिए शिक्षिका ने बच्चों की मदद से अलग-अलग सामग्रियों के नाम की काग़ज़ की पर्चियाँ बनाईं। शिक्षिका उन पर्चियों को गड्ड-मड्ड कर देती हैं। बच्चों को उन पर्चियों को वस्तुओं के आधार पर वर्गीकृत करना होता है, जैसे फलों के नाम वाली पर्चियाँ एक साथ या यातायात के साधन वाली पर्चियाँ एक साथ। इससे बच्चों में पढ़ने की इच्छा तो जागती ही है साथ में वर्गीकृत करने की क्षमता भी बढ़ती है।

अँग्रेज़ी अक्षरों के लिए चित्रकारी

अपने विद्यार्थियों की ख़ुशी के लिए, शिक्षिका अँग्रेज़ी अक्षरों के इस्तेमाल से अनेक प्रकार की चीज़ें बनाती हैं। वह वस्तुओं का नाम अँग्रेज़ी और हिन्दी, दोनों भाषाओं में लिखती हैं, ताकि बच्चे चित्र को देखकर अक्षरों को पहचान सकें। इस पद्धति से बच्चों को अँग्रेज़ी के अक्षर और शब्द, दोनों सीखने में बेहद मदद मिलती है।

स्वरचित कविताओं के ज़रिए शिक्षण

अंजलि गुप्ता के अनुसार, जब तक कक्षा में सीखी बात दोहराई न जाए बच्चे इसे भूल जाते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने कुछ छोटी कविताओं की रचना की। जिससे बच्चों का अभ्यास नियमित रूप से होता है। सुबह की सभा में वे बच्चों से इन कविताओं को गाने के लिए कहती हैं। बच्चे इन कविताओं को कुछ हाव-भाव के साथ गाते-गुनगुनाते हैं। जैसे कि उन्होंने पर्यावरण विज्ञान के विषय में ट्राफिक नियमों को समझाते हुए एक कविता लिखी :

लाल बत्ती कहती थम

चलते-चलते रुकते हम

पीली कहती होशियार

चलने को हो जाओ तैयार

हरी बताए चलते जाओ

आगे-आगे बढ़ते जाओ

गिनती :

चिड़िया-चिड़िया उड़ती जाए..

चिड़िया-चिड़िया ख़ुशी से गाए

पाँच छोटी चिड़िया चला रही थीं कार

एक चिड़िया उड़ गई बाक़ी बचीं चार

चार छोटी चिड़िया बजा रही थीं बीन

एक चिड़िया उड़ गई बाकी बचीं तीन
तीन छोटी चिड़िया बो रही थीं जौ
एक चिड़िया उड़ गई बाकी बचीं दो
दो छोटी चिड़िया खा रही थीं केक
एक चिड़िया उड़ गई बाकि बची एक
एक छोटी चिड़िया बन रही थी हीरो
वो भी उड़ गई बाकी बचा जीरो

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण :

आओ हिन्दी व्याकरण से तुमको मिलवाते हैं
संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया,विशेषण तुमको समझाते हैं
नाम बताने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं
जो संज्ञा के पहले आए सर्वनाम बन जाते हैं
लड़का लड़की राधा मोहन संज्ञा की पहचान हैं
यह वह इसका उसका बताना सर्वनाम का काम है
मम्मी और टीचर बन क्रिया सब काम करवाता है
पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने के नियम समझाता है
संज्ञा के गुण-दोष बताए विशेषण वह कहलाता है
नए-पुराने, अच्छे-बुरे का भेद यह समझाता है
हिन्दी व्याकरण... हिन्दी व्याकरण...

पर्यायवाची :

ईश्वर, प्रभु, परमेश्वर, भगवन
बेटा, वत्स, तनय सुत नंदन
अर्थ एक समान हैं अनगिनत हैं नाम
बादल, मेघ, पयादे, पयोधर
पर्वत, शैल, पहाड़ और भूधर
भंवरा, अलि मधुकर और भृंग
विषधर, नाग, अहि, सर्प, भुजंग
रात्रि, रैन, निशा, निशि, यामिनी
चपला, चंचला, बिजली, दामिनी
माता, जननी, माँ और धारिणी
ललना, नारी, रमणी, कामिनी

इस तरह मज़ेदार और दिलचस्प शिक्षण पद्धति को अपनाते हुए अंजलि गुप्ता, स्कूली किताबों के विषयों को बच्चों के लिए आसान बनाती हैं। अंजलि गुप्ता सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कई गतिविधियों और अपनी कविताओं का इस्तेमाल कर उसे रोचक बनाती हैं। इससे विद्यार्थी को पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु को समझने में सहजता होती है। बच्चे पढ़ने और सीखने की क्रिया में रुचि लेते हैं और वे बेहतर सीख पाते हैं।



प्रिया जायसवाल अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, ज़िला संस्थान, देहरादून में पर्यावरण विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की स्रोत व्यक्ति (रिसोर्स पर्सन) हैं। वे एक दशक से भी अधिक समय से फ़ाउंडेशन के साथ शिक्षक-क्षमता विकास वृद्धि कार्यक्रमों (सेवाकालीन और सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा), पाठ्यक्रम की योजना और सामग्री विकास जैसे कुछ कार्यक्रमों का हिस्सा रही हैं। उनसे *priya.jaiswal@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सोनम कुमारी   **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता   **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय